डॉ. अल फ़ुहर , सभोपदेशक , सत्र 7

© 2024 अल फ़ुहर और टेड हिल्डेब्रांट

नीतिवचन की पुस्तक के परिचय में, यह कथन दिया गया है कि प्रभु का भय ज्ञान की शुरुआत है। अब, कोहेलेट के लिए, हम पाते हैं कि ईश्वर का भय बुद्धि का अंत या ज्ञान का अंत है।

दूसरे शब्दों में, वहाँ आवश्यक रूप से अलगाव नहीं है। मुझे लगता है कि कुछ अर्थों में वे एक ही हैं। नीतिवचन के लेखक हमें बताते हैं कि ईश्वर का भय, एक अभिविन्यास, ईश्वर के प्रति श्रद्धा की एक उचित मुद्रा, जहां ईश्वर महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, और ईश्वर की मान्यता या स्वीकारोक्ति निर्णय लेने में सहायक होती है जो हर दिन हो रही है। ईश्वर के अनुयायियों में से किसी एक का या किसी बुद्धिमान व्यक्ति का, ईश्वर के प्रति वह रुझान, ईश्वर के प्रति भय या श्रद्धा, यही बुद्धिमानीपूर्ण निर्णय लेने की शुरुआत है।

कोहेलेट की बुद्धि यह नहीं पाती कि ईश्वर के भय का ज्ञान में कोई स्थान नहीं है। यह इतना अधिक व्यावहारिक ज्ञान नहीं है जिसमें पूरे जीवन पर शासन करने वाले ईश्वर के अधिकार की कोई मान्यता नहीं है। वास्तव में, ईश्वर का भय, जीवन के आनंद की तरह, कोहेलेट की पुस्तक के धर्मशास्त्र और ज्ञान में बहुत एकीकृत और अभिन्न है।

हम पाते हैं कि ईश्वर का भय एक निषेधाज्ञा है, यह एक आदेश है जो न केवल उपसंहार, पुस्तक के अंत तक ही पाया जाता है, हालाँकि इसे निश्चित रूप से वहाँ उजागर किया गया है, लेकिन हम यह भी पाते हैं कि यह पूरे विचार-विमर्श और विभिन्न साहित्यिक में एकीकृत है। सभोपदेशक की पुस्तक के बिंदु या साहित्यिक घटक। इस व्याख्यान में, मैं ईश्वर के भय को एक प्रमुख उद्देश्य के रूप में देखने के लिए कुछ समय लेना चाहूंगा और इन रूपांकनों को एक प्रकार के व्यापक संदेश से जोड़ूंगा जो एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक हमें छोड़ती है। ईश्वर का भय एक मूल भाव है जो कोहेलेट की रूढ़िवादिता को उजागर करता है।

बहुत से पाठक सभोपदेशक की पुस्तक पढ़ते हैं और मन ही मन सोचते हैं, ठीक है, यह बाकी धर्मग्रंथों के अनुरूप नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि ऐसा करने में, वे कुछ हद तक इन बहुत ही स्पष्ट बयानों को नजरअंदाज कर देते हैं जो ज्ञान को ईश्वर के भय से जोड़ते हैं . मैं आपको सुझाव दूंगा कि ईश्वर का भय फिर से केवल एक निष्कर्ष नहीं है, बल्कि यह सभोपदेशक की पुस्तक के संपूर्ण संदेश का एक घटक है। यह सभोपदेशक के संदेश का केंद्र है।

आइए कुछ मिनटों का समय निकालकर ईश्वर के भय के ऐसे कुछ कथनों पर गौर करें जो हमें एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में मिलते हैं। एक बात जिसे हमने पहले देखा था जब हम समय पर कविता देख रहे थे वह ईश्वर का भय है जिसे मनुष्य के अपने भविष्य के बारे में कुछ भी जानने और यह पहचानने में असमर्थता के प्रकाश में आवश्यक माना जाता है कि एक समय आएगा भविष्य में हिसाब का. सभोपदेशक अध्याय 3 और श्लोक 14 में, जैसा कि मैंने पहले कहा है, धर्मग्रंथ में एक जगह जहां मुझे पता है कि वहां कुछ प्रकार की व्याख्या है कि क्यों भगवान कुछ चीजें इस तरह से करते हैं, भले ही मानव जाति समझ न सके। 3.14 में पाया गया, और यह भय है, यह ईश्वर के भय से जुड़ा हुआ है।

मैं जानता हूं कि परमेश्वर जो कुछ भी करेगा वह सदैव कायम रहेगा। इसमें न तो कुछ जोड़ा जा सकता है और न ही कुछ निकाला जा सकता है। परमेश्वर ऐसा इसलिए करता है ताकि मनुष्य उसका आदर करें।

यारे यहाँ हिब्रू शब्द है, उससे डरो। अब यह किसी प्रकार का आतंक नहीं है जिससे मानवजाति पंगु हो जाती है और कार्य करने में असमर्थ हो जाती है, बल्कि यह एक प्रकार से ईश्वर की ओर उन्मुखीकरण है जहाँ मानवजाति को एहसास होता है कि वह अंतिम अधिकार और नियंत्रण नहीं है, बल्कि ईश्वर ही अधिकार और नियंत्रण है, और यह पुराने नियम के रूढ़िवादी ज्ञान और निश्चित रूप से सभोपदेशक के संदेश के लिए बहुत मौलिक है। लेकिन ऐसा सिर्फ इसलिए नहीं है कि मनुष्य को ईश्वर से डरना चाहिए क्योंकि वह ईश्वर के तरीकों को समझने या ईश्वर पर भरोसा करने में सक्षम नहीं है।

यह वास्तव में अंतिम निर्णय की अपेक्षा है जो कोहेलेट को ईश्वर से डरने के अपने आदेशों के लिए प्रेरित करती प्रतीत होती है। आगे आने वाले छंदों में, जो कुछ भी पहले से ही था और जो कुछ भी होगा वह पहले ही हो चुका है, और भगवान अतीत को ध्यान में रखेंगे, शायद जिम्मेदारी की कुछ भावना का संकेत देते हुए, हिसाब-किताब का दिन। श्लोक 16, और मैंने सूर्य के नीचे कुछ और देखा।

न्याय के स्थान पर दुष्टता थी। न्याय के स्थान पर दुष्टता का बोलबाला हो गया। दूसरे शब्दों में, आप उस समाज में भ्रष्टाचार पाते हैं जहां दुष्टता अदालत के स्थान पर होती है, उस स्थान पर जहां न्याय मिलना चाहिए, उस स्थान पर जहां भगवान को निर्णय और न्याय देना चाहिए।

कभी-कभी ऐसा लगता है मानो लोग अक्सर इससे बच निकलते हैं। तो कोहेलेट ने विचार किया, मैंने अपने दिल में सोचा, भगवान धर्मी और दुष्ट दोनों का न्याय करेंगे और हर गतिविधि के लिए एक समय होगा, हर काम के लिए एक समय होगा। यहाँ यह केवल वर्तमान में निर्धारित समय की बात नहीं है।

मनुष्य के लिए वर्तमान में कार्य करना उचित समय की बात नहीं है। परन्तु परमेश्वर के पास हिसाब करने की एक अवधि है, हिसाब करने का एक दिन है। और मुझे लगता है कि कोहेलेट एक बुद्धिमान व्यक्ति के रूप में देखता है कि उस तरह का सर्वव्यापी निर्णय वर्तमान में नहीं होता है, इसलिए वह भविष्य में ऐसा होने की उम्मीद करता है।

और मैं आपको सुझाव दूंगा कि अध्याय 3 और श्लोक 17 और विशेष रूप से अध्याय 12 और श्लोक 13 और 14 के प्रकाश में, जहां मनुष्य व्यक्तिगत रूप से, इज़राइल सामूहिक रूप से नहीं, बल्कि व्यक्तिगत रूप से अपने द्वारा किए गए कार्यों का हिसाब देगा, इसका तात्पर्य है यह युगांतशास्त्रीय निर्णय ऐसा कुछ नहीं है जिसकी राष्ट्र के विरुद्ध कार्रवाई की उम्मीद की जानी चाहिए या भविष्यवक्ताओं के तरीके से राष्ट्र को वितरित किया जाना चाहिए, बल्कि यह कुछ ऐसा है जिसकी व्यक्ति की ओर से उम्मीद की जा सकती है। फिर, जहां तक पुराने नियम में पुनर्जन्म और मृत्यु के धर्मशास्त्र का संबंध है, वास्तव में लिफाफे को आगे बढ़ाया जा रहा है। किसी भी मामले में, भविष्य के फैसले की इस उम्मीद के भीतर यह विचार निहित है कि मनुष्य ईश्वर से

डरता है न केवल इसलिए कि वह वर्तमान में ईश्वर के तरीकों को समझने में असमर्थ है, बल्कि इसलिए भी कि उसे भविष्य में अपने कार्यों का हिसाब देना होगा।

और इस प्रकार हम देखते हैं कि अध्याय 3 और श्लोक 14 में, ईश्वर के भय की ओर एक संकेत है। हम इसे संभवतः सभोपदेशक अध्याय 5 श्लोक 1 से 7 में भी अधिक स्पष्ट तरीके से देखते हैं। अब सभोपदेशक कोई ऐसी पुस्तक नहीं है जो प्राचीन इज़राइल के पंथ की विशेषता है। दूसरे शब्दों में, आप बलिदान और उस तरह की चीजों के बारे में बहुत कुछ नहीं देखते हैं जो पुराने नियम के कानून द्वारा व्यवस्थित और आवश्यक थीं।

आपको वास्तव में प्राचीन इज़राइल में पुरोहितवाद और इस तरह के या धार्मिक उत्सवों के तंत्र का संदर्भ नहीं मिलता है, लेकिन यह पूरी तरह से इस प्रकार की चीजों से रहित नहीं है। वास्तव में, कम से कम ईश्वर के प्रति श्रद्धा के संबंध में, आपको यहां एक बुद्धिमान व्यक्ति की ईश्वर के समक्ष मुद्रा और ईश्वर के प्रति विस्मय में खड़े होने के संबंध में कुछ कथन मिलते हैं। और इसलिए, अध्याय 5 और श्लोक 1 में, पाठ में लिखा है, जब आप भगवान के घर जाएं, तो अपने कदमों की रक्षा करें , जिसका अर्थ शायद यहां मंदिर है।

उन मूर्खों का बलिदान चढ़ाने के बजाय सुनने के लिए पास जाओ जो नहीं जानते कि वे गलत करते हैं। अपने मुँह में जल्दी मत करो. शायद मूर्खों के बलिदान के विचार को किसी के मुंह से जल्दी या तेजी से जोड़ने से आप लगभग यहां और अभी भगवान के प्रति श्रद्धा और पूजा की हमारी मुद्रा को अर्पित करने के बारे में सोचने लगते हैं।

ऐसा नहीं है कि हम आवश्यक रूप से किसी मंदिर में भगवान के पास जाते हैं, लेकिन जब हम भगवान से शब्द बोलते हैं, तो रोमियों अध्याय 12 और श्लोक 1 और 2 के बारे में सोचें, इसलिए, भाइयों, मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि भगवान की दया से आप अपने शरीर को प्रस्तुत करें। एक जीवित बलिदान के रूप में, पवित्र और ईश्वर को स्वीकार्य, जो आपकी सेवा का उचित कार्य है, या जैसा कि कुछ अनुवादों में होगा, एक प्रकार की उचित पूजा या पूजा की सही भावना। और इसलिए, यह मुझे उन शब्दों के बारे में सोचने पर मजबूर करता है जो हम बोलते हैं जो वास्तव में भगवान के सामने पूजा और आसन का मामला है। और जब हम मूर्खतापूर्ण ढंग से बोलते हैं और हम जल्दबाजी में बोलते हैं, तो यह हमारी दिशा को प्रदर्शित करता है, शायद एक मूर्ख व्यक्ति के रूप में।

अपने मुँह में जल्दी मत करो. भगवान के सामने कुछ भी बोलने में अपने दिल में जल्दबाजी न करें, खासकर पूजा की मुद्रा में। भगवान स्वर्ग में हैं और आप पृथ्वी पर हैं।

याद रखें कि सूर्य के परिप्रेक्ष्य में। यह आवश्यक रूप से एक भटका हुआ परिप्रेक्ष्य नहीं है, लेकिन ईश्वर के धर्मशास्त्र और मनुष्य के धर्मशास्त्र, धर्मशास्त्रीय मानवविज्ञान में, ईश्वर और मनुष्य के बीच अलगाव की भावना है। ईश्वर मानवजाति के मामलों में शामिल है, लेकिन वह पूरी तरह से अलग है।

वह अलग है. और एक बुद्धिमान व्यक्ति उसे पहचान कर चलेगा या अपने कदम इस तरह रखेगा कि वह उस अंतर को स्वीकार करते हुए चले। कोहेलेट के धर्मशास्त्र में ईश्वर सिर्फ एक मित्र या दोस्त नहीं है।

ईश्वर पूर्णतया अन्य है. परमेश्वर स्वर्ग में है और तुम पृथ्वी पर हो, इसलिए तुम्हारे शब्द कम होने चाहिए। जैसे बहुत सारी चिन्ताएँ होने पर स्वप्न आता है, वैसे ही बहुत सारी बातें होने पर मूर्ख की वाणी आती है।

और इसलिए, हम यहां इस लौकिक कथन में इस कारण-और-प्रभाव संबंध को देखते हैं। तो, बहुत सारे शब्द होने पर मूर्ख की वाणी। जब आप भगवान से कोई मन्नत मांगते हैं तो उसे पूरा करने में देर न करें।

तो फिर, यह जरूरी नहीं है कि यहां प्राचीन इज़राइल की सभी धार्मिक संरचना का प्रतिनिधित्व किया जाए, लेकिन आपके पास यह समझ है कि मानव जाति भगवान के सामने प्रतिज्ञा कर सकती है और कोहेलेट इसे पहचानता है। और वह कहता है, देर मत करो। मूर्ख न बनें।

ईश्वर के प्रति लापरवाही से या अनादरपूर्वक कार्य न करें। जानिए वह कौन है. उसे मूर्खों में कोई आनंद नहीं है.

अपनी प्रतिज्ञा पूरी करो. ईश्वर उत्कृष्ट है, लेकिन वह ध्यान दे रहा है। और वह जानता है कि कोई कब मूर्खतापूर्ण कार्य करता है।

आप भगवान से जो मन्नत मांगते हैं , वह मन्नत जल्दी पूरी करते हैं। मूर्ख का अभिनय मत करो. मन्नत मानकर उसे पूरा न करने से बेहतर है कि मन्नत न मानी जाए।

इसमें ज्ञान की थोड़ी सी झलक है जैसा कि हम किसी ज्ञान पुस्तक में अपेक्षा करते हैं। अपना मुँह तुम्हें पाप की ओर न ले जाने दे। आपको वहां नीतिवचनों की किताब और मुंह में जल्दबाजी करने, अपने मुंह से बोले गए शब्दों के बारे में कई कहावतों के बारे में सोचने पर मजबूर कर देता है।

और मन्दिर के दूत का विरोध न करना। मेरी प्रतिज्ञा एक गलती थी. दूसरे शब्दों में, जब आप एक पवित्र, धर्मी और शक्तिशाली भगवान के सामने खड़े होते हैं तो यह इसे खत्म करने का मामला नहीं है।

परमेश्वर तुम्हारी बातों पर क्रोधित होकर तुम्हारे हाथ का काम क्यों नष्ट करे? बहुत सपने देखना और बहुत सी बातें करना व्यर्थ है , इसलिये परमेश्वर का भय मानना। और इसलिए इस गिरी हुई दुनिया के भारीपन के भीतर भी, कोहेलेट यह मानते हैं कि ईश्वर के प्रति व्यक्ति का दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है। और जब कोई बेतरतीब ढंग से शब्दों का उच्चारण करता है और ऐसे कार्य करता है जैसे कि ईश्वर केवल एक बाद का विचार है या ऐसा कार्य करता है जैसे कि ईश्वर बस एक प्रकार का प्राणी है जिसे हम बस, आप जानते हैं, एक तरह से ढेर कर सकते हैं और उसके प्रति

श्रद्धापूर्वक कार्य नहीं कर सकते हैं, कोहेलेट यह बिल्कुल स्पष्ट है कि व्यक्ति मूर्ख की भूमिका निभाता है।

यह जानना कि ईश्वर कौन है, आवश्यक रूप से किसी प्रकार के भय से कांपना नहीं है जिसके कारण मनुष्य इस दुनिया में कार्य करने में सक्षम नहीं हो पाता है, बल्कि ईश्वर के समक्ष एक सटीक और श्रद्धापूर्ण मुद्रा, कुछ ऐसी चीज है जो एक्लेसिएस्टेस के ज्ञान के लिए बहुत मौलिक है। इसलिए, परमेश्वर का भय मानें। यहाँ अपने रचयिता को याद रखने के लिए एक प्रकार की अनिवार्य आज्ञा है।

इससे आगे बढ़ते हुए, अध्याय 11 और श्लोक 9 में, हमारे पास ईश्वर के भय के संबंध में एक बहुत स्पष्ट कथन है। हे नवयुवक, जब तक तुम जवान हो खुश रहो, और जवानी के दिनों में तुम्हारा दिल तुम्हें खुशी दे। जो कुछ तुम्हारी आंखें देखें उसमें अपने हृदय का अनुसरण करो।

तो, यह सातवें और आखिरी आनंद जीवन का हिस्सा है। और फिर, सभोपदेशक की पुस्तक में जीवन का आनंद और ईश्वर का भय बहुत हद तक साथी हैं। कुछ लोग उन्हें लगभग ध्रुवीय विपरीत के रूप में देखेंगे।

मैं आपको सुझाव दूंगा कि वे वास्तव में हाथ से काम करते हैं या काफी संगत हैं जब आप पहचानते हैं कि ईश्वर का भय किसी प्रकार की तपस्या नहीं है और जीवन का आनंद किसी प्रकार का सुखवाद नहीं है, बल्कि जब वे एक दूसरे के पूरक होते हैं कोई यह मानता है कि ईश्वर हमें आनंद के अवसर प्रदान करता है और फिर भी हम जीवन इस तरह जीते हैं कि हम पाप का आनंद नहीं लेते हैं, बल्कि ईश्वर के सामने श्रद्धापूर्वक और संयमपूर्वक रहते हैं। क्योंकि सभी आनंदों और भगवान के उपहारों का आनंद लेने की क्षमता में, जान लें कि हम जो काम करते हैं, उसके लिए भगवान आपको न्याय के कटघरे में लाएंगे। और इसलिए यहाँ न्याय की अपेक्षा भी ईश्वर के भय के प्रति उत्प्रेरक प्रतीत होती है।

तो फिर, चिंता को अपने दिल से निकाल दो और अपने शरीर की परेशानियों को दूर कर दो, क्योंकि जवानी और जोश क्षणभंगुर या भारी हैं , और फिर मुसीबत के दिन आने से पहले, अपनी जवानी के दिनों में अपने निर्माता को याद करो। मृत्यु की अनिवार्यता ईश्वर के भय के लिए एक प्रकार के प्रेरक के रूप में कार्य करती है। फिर, यह डर से कांपना नहीं है, बल्कि यह भगवान के सामने श्रद्धा का सही अभिविन्यास और मुद्रा है।

यह व्यक्ति को संयमित ढंग से जीने के लिए प्रेरित करता है, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि हम जो कर्म करेंगे उसके लिए हम जवाब देंगे। अध्याय 12 और श्लोक 13 और 14 में, निश्चित रूप से, ईश्वर के भय पर सबसे महत्वपूर्ण खंडों में से एक पूरे मामले के निष्कर्ष में पाया जाता है। और इसलिए, पुस्तक के उपसंहार में, बयान दिया गया है, अब सब कुछ सुना जा चुका है, यहाँ मामले का निष्कर्ष है।

अब, कोई व्यक्ति आनंदमय जीवन के विभिन्न परहेजों को अनिवार्यता की ओर ले जाने वाले रूप में देख सकता है, जिसका अर्थ एक प्रकार का निष्कर्ष, आनंदमय जीवन निष्कर्ष होगा, लेकिन फिर से यह दो तरफा ज्ञान का सिक्का है। पुस्तक के अंत में, उपसंहार में, हमें यह कथन मिलता

है कि पूरे मामले का निष्कर्ष यह है कि व्यक्ति को ईश्वर से डरना चाहिए, यह एक बार फिर अनिवार्य है, ईश्वर से डरें और उसकी आज्ञाओं का पालन करें, क्योंकि यही संपूर्ण मनुष्य है . एनआईवी इसका अनुवाद मनुष्य के संपूर्ण कर्तव्य के रूप में करता है।

यह वाक्यांश वास्तव में काफी अस्पष्ट है, यह मनुष्य के संपूर्ण कर्तव्य को संदर्भित कर सकता है, दूसरे शब्दों में, यह मनुष्य की प्राथमिक जिम्मेदारी है, या यह मनुष्य की संपूर्ण गतिविधियों को संदर्भित कर सकता है, दूसरे शब्दों में, ईश्वर का भय होना चाहिए इस दुनिया में हम जो भी गतिविधियाँ और विकल्प अपनाते हैं, उनमें हम जो भी निर्णय लेते हैं, उन्हें पूरा करना। सच तो यह है कि यह किसी भी दिशा में जा सकता है और दोनों ही उस तरह के ज्ञान को प्रतिबिंबित करेंगे जो हमें एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में मिलता है। क्योंकि परमेश्वर हर काम का, हर छिपी हुई बात का, चाहे वह अच्छा हो या बुरा, न्याय करेगा।

अब कुछ विद्वान यह कहने के लिए आगे आए हैं कि मामले के निष्कर्ष के रूप में पुस्तक के अंत में ईश्वर के आदेश का भय एक्लेसिएस्टेस की बाकी पुस्तक के लिए इतना विदेशी लगता है कि किसी को इसे बाद के काम के रूप में पहचानना चाहिए। रूढ़िवादी सुधारक, कोई ऐसा व्यक्ति जो बाद में आता है और कोहेलेट के बाकी अपरंपरागत बयानों को सही करने के लिए इसे पाठ में जोड़ता है, या यह पुस्तक के भीतर ही एक प्रकार की फ़ॉइल या सुधारात्मक हो सकता है जहां कोहेलेट को होश आता है अपने जीवन का अंत और कहता है, अरे, मैंने इस पर जो कुछ भी देखा है, मैंने उसका अन्वेषण कर लिया है, मैं यहां थोड़ी सी मूर्खता से ग्रस्त हो गया हूं और मैं वहां थोड़ा सा पाप से जुड़ गया हूं और मैं एक तरह से आ गया हूं यह महसूस करने के लिए कि सभी चीज़ों पर विचार करने के बाद ईश्वर का भय आवश्यक है। अब यह सही सोच हो सकती है. मेरा मतलब है कि उस सोच में निश्चित रूप से कुछ भी गलत नहीं है।

मुझे लगता है कि हम एक्लेसिएस्टेस की किताब पर ही कुछ ऐसी बातें थोप रहे होंगे जिनका पालन किताब खुद नहीं करती। उदाहरण के लिए, हम पुस्तक में पहले ही इनमें से कुछ आनंद-जीवन निषेधों को देख चुके हैं। अध्याय 3 और श्लोक 17 तर्क की पंक्ति में बहुत एकीकृत हैं।

मैं इसे उस ब्रैकेटिंग के एक भाग के रूप में देखता हूं, वह समावेशन जो अध्याय 3 और श्लोक 1 से शुरू होता है, बस यह सुझाव देने के लिए कि अध्याय 3 और श्लोक 17 को बाद में डाला गया था, वहां थोड़ा अजीब, थोड़ा अजीब लगेगा। अध्याय 5 और श्लोक 1 से 7 फिर से बहुत हद तक तर्क की पंक्ति में एकीकृत प्रतीत होते हैं जहां कोई पतित दुनिया में दैवीय और नश्वर प्राणियों के बीच अलगाव को पहचानता है और इसलिए उचित श्रद्धा जो भगवान को सौंपी जाती है। ईश्वर के समक्ष श्रद्धा और उचित मुद्रा के संबंध में एक प्रकार का ज्ञान धर्मशास्त्र, इसे शेष पुस्तक में एकीकृत किया गया है। अध्याय 11 और श्लोक 9 अध्याय 12 और श्लोक 1 तक ले जाता है, यह एक जवानी के रूप में जीवन का आनंद है जिसे किसी की युवावस्था में ईश्वर के भय के साथी के रूप में मापा जाता है या देखा जाता है, यह जानते हुए कि कल की कोई गारंटी नहीं है।

कोहेलेट कहते हैं कि अब ईश्वर को याद करो, इसे तब तक मत टालो जब तक तुम बूढ़े आदमी न हो जाओ, जब तक तुम एक बूढ़ी औरत न हो जाओ, ऐसा व्यवहार करो जैसे कि तुम आज पाप से

बच सकते हो और फिर ईश्वर के साथ सही हो सकते हो बाद में आपके मरने से पहले. आप नहीं जानते कि आपके लिए कल की गारंटी है या नहीं। अब भगवान को याद करो.

आप 20, 30 और 40 की उम्र में अपने जीवन के अंत तक किए गए कार्यों का जवाब देंगे। वह जीवन कब कट जायेगा, तुम्हें पता भी नहीं चलेगा। आप एक क्रूर जाल में फंस सकते हैं जैसा कि कोहेलेट अध्याय 9 और श्लोक 11 और 12 में कहेंगे।

आप अपने दिनों के अंत को नहीं जानते। एक बात जो आप जानते हैं वह यह है कि आप किस ओर बढ़ रहे हैं, आप हिसाब-किताब के दिन की ओर बढ़ रहे हैं, एक ऐसा दिन जब आप अपने द्वारा किए गए कार्यों के लिए ईश्वर के सामने जवाब देंगे। तो अब भगवान को याद करो.

अब भगवान से डरो. दूसरे शब्दों में, अध्याय 12 और श्लोक 13 और 14 में, यह सुधारात्मक के रूप में कार्य नहीं कर रहा है। यह एक प्रकार की पन्नी नहीं है जहां बाकी किताब सीधी रखी जाती है।

यह बिल्कुल कोहेलेट के धर्मशास्त्र के अनुरूप है। वास्तव में, अध्याय 12 और श्लोक 13 और 14 अन्य परिच्छेदों जैसे कि 3 17, अध्याय 11 और श्लोक 9, और अध्याय 12 और श्लोक 1 के साथ काफी समानता पाते हैं। यह भी दिलचस्प है कि ईश्वर का भय एक साथी है यह निर्णय के आसन्न समय की मान्यता है। मेरे साथ अध्याय 3 और श्लोक 14 पर फिर से नज़र डालें।

परमेश्वर ऐसा इसलिए करता है ताकि मनुष्य उसका आदर करे या उससे डरे। और फिर आप फैसले की इस उम्मीद के तुरंत बाद देखते हैं। न्याय के स्थान पर दुष्टता थी।

और न्याय के स्थान पर दुष्टता व्याप्त हो गई। तो कोहेलेट का मानना है कि मनुष्य के वर्तमान अनुभव में, भ्रष्टाचार है और अन्याय है। भविष्यवक्ता निश्चित रूप से अनेक भविष्यवाणियों में इसे प्रतिबिंबित करते हैं।

वे देश में होने वाले अन्याय के कारण इस्राएल और इस्राएल और यहूदा के नेताओं के विरुद्ध न्याय की घोषणा करते हैं। जब भी मैं सामाजिक अन्याय और दुनिया में न्याय के लिए भगवान की देखभाल और दुनिया में न्याय देखने की उनकी इच्छा के बारे में सोचता हूं, तो मैं विशेष रूप से अमोस की किताब के बारे में सोचता हूं। लेकिन अक्सर हम अपने अनुभव और अवलोकन में देखते हैं कि ऐसा लगता है कि चीजें अभी ठीक नहीं हुई हैं।

और इसलिए कोहेलेट को भविष्य में फैसले की उम्मीद है। परमेश्वर न्याय लाएगा, चाहे धर्मी हो या दुष्ट। और हर काम के लिए एक समय और हर काम के लिए एक समय होगा।

वैसे, इस भाषा पर गौर करें. परमेश्वर न्याय लाएगा, चाहे धर्मी हो या दुष्ट। जब आप श्लोक 14 को देखते हैं, तो आप पाते हैं कि ईश्वर हर कार्य का न्याय करेगा, चाहे वह अच्छा हो या बुरा।

फिर, ऐसा नहीं है कि अध्याय 12 और श्लोक 14 अपने आप खड़े हैं और सभोपदेशक की पुस्तक में ऐसा कुछ भी नहीं है जो इसके साथ संरेखित हो। न्याय का समय आएगा. अध्याय 12 और श्लोक 14 में परमेश्वर इसका न्याय करेगा क्योंकि परमेश्वर हर कार्य का न्याय करेगा।

यह आपको अध्याय 3 और श्लोक 17 के बारे में निश्चित रूप से सोचने पर मजबूर कर देता है। आप अध्याय 12 और श्लोक 1 में यह भी पाते हैं कि भगवान को याद रखने की अनिवार्यता अध्याय 11 और श्लोक 9 में न्याय की अपेक्षा से प्रेरित प्रतीत होती है। यह जान लें कि इन सभी चीजों में, भगवान तुम्हें न्याय के कटघरे में लाएंगे। वैसे, आपको अध्याय 11 और श्लोक 9 से लेकर अध्याय 12 और श्लोक 13 और 14 में भी समानताएँ मिलती हैं।

पद 14 में, परमेश्वर प्रत्येक कार्य का न्याय करेगा। अध्याय 11 और श्लोक 9 में, अपने दिल के तरीकों का पालन करें और जो कुछ भी आपकी आँखें देखती हैं, उसका पालन करें, लेकिन यह जान लें कि इन सभी चीजों के लिए, भगवान आपको न्याय के कटघरे में लाएंगे। निर्णय की व्यापकता और मनुष्य इसके लिए क्या उत्तर देगा, ये बातें अध्याय 11 और अध्याय 12 के बीच एक साथ संरेखित होती प्रतीत होती हैं।

फिर, अध्याय 12 और श्लोक 13 और 14 को बाद के संस्करण के रूप में प्रस्तुत करने के लिए, आपको स्पष्ट रूप से अध्याय 11 और श्लोक 9 के लिए भी कुछ ऐसा ही करना होगा। और फिर अध्याय 12 और श्लोक 13 और 14 को फिर से करना होगा। अब सब सुन लिया गया है. यहाँ इस मामले का निष्कर्ष है।

ईश्वर से डरना। उसकी आज्ञाओं का पालन करो. और क्यों? क्योंकि हर काम का, हर छुपी हुई चीज़ का, चाहे वह अच्छा हो या बुरा, न्याय किया जाएगा।

अब भविष्य में किसी तरह के फैसले की यह उम्मीद, एक्लेसिएस्टेस इस पर ठोस नहीं है। वह निश्चित रूप से इसका विवरण नहीं देते। और कई टिप्पणीकारों का कहना है कि सभोपदेशक की पुस्तक में भविष्य में न्याय की कोई अपेक्षा नहीं है।

हालाँकि, कई विद्वानों का मानना है कि एक्लेसिएस्टेस कम से कम संकेत दे रहा है, भले ही वह कितना भी छिपा हुआ और अनिश्चित क्यों न हो, भविष्य के फैसले की कुछ उम्मीद है। मैं कथन द्वारा सुझाव दूंगा, हर छिपी हुई चीज़, जो कुछ ऐसा सुझाव देती प्रतीत होती है जो वर्तमान काल में या स्वर्ग की दुनिया में मानव जाति के वर्तमान अनुभव में नहीं किया जाता है, बल्कि यह कुछ ऐसा है जिसे इस जीवन का अनुभव होने के बाद अनुभव किया जा सकता है, मृत्यु घटित होने के बाद, और वह फिर से उस लिफाफे को खोल देता है जिसके बारे में हम नए नियम में ईश्वर के निर्णयों के बारे में पढ़ते हैं। अब एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में सात प्रमुख रूपांकनों के बारे में खोजबीन की गई है, यदि आप सूर्य के नीचे के परिप्रेक्ष्य को भी एक रूपांकन के रूप में खड़ा मानते हैं।

इनमें से कुछ शायद दूसरों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हैं। जाहिर है, जीवन की गंभीरता को ठीक से समझने की जरूरत है। यही दुविधा है, यही समस्या है, जो जीवन के पतन को प्रतिबिंबित

करती है, एक्लेसिएस्टेस को उत्पत्ति की पुस्तक और विशेष रूप से उत्पत्ति अध्याय 3 से जोड़ती है। हम पाते हैं कि क्षैतिज परिप्रेक्ष्य महत्वपूर्ण है।

हम कोहेलेट की सोच के बारे में बहुत अधिक नहीं पढ़ना चाहते। वह एक व्यवस्थित धर्मशास्त्री के रूप में नहीं बोल रहा है। वह पवित्रशास्त्र के संपूर्ण संग्रह में हमारे पास मौजूद सभी रहस्योद्घाटन ज्ञान से अवगत नहीं है।

हमारे पास इतिहास के इस बिंदु पर आरंभ की गई सभी 66 पुस्तकें उपलब्ध नहीं हैं। कोहेलेट आपकी और मेरी तरह रहस्योद्घाटन की पुस्तक नहीं पढ़ रहा था। वह 2 कुरिन्थियों 5 में बेमा सीट के फैसले के बारे में नहीं जानता था। वह प्रकाशितवाक्य में महान सफेद सिंहासन के फैसले के बारे में नहीं जानता था।

कोहेलेट चीजों को उस क्षैतिज और फिर भी बुद्धिमान दृष्टिकोण से देखता है। याद रखें, वह चीज़ों को समझदार नज़रों से देख रहा है। वह ज्ञान के माध्यम से खोज कर रहा है, प्राचीन निकट पूर्वी दुनिया के सभी बुद्धिमान संतों के पास उनकी क्षमता के अनुसार क्या था।

और वह ज्ञान और ज्ञान के उपदेशों को ग्रहण करने और उन उपदेशों के माध्यम से जिस दुनिया में वह रहता था उसका आकलन करने की क्षमता में किसी भी अन्य से आगे निकल गया था। वह उन उपदेशों को हेवेल दुनिया में जीवन के संबंध में अपनी टिप्पणियों और अनुभवों में ले जाता है, और वह यह देखने के लिए खोज करता है कि क्या कोई यिट्रोन है या नहीं , हेवेल की दुविधा का कोई समाधान, कोई लाभ या अधिशेष, कुछ ऐसा जो सभी चीजों के समाप्त होने के बाद बचा हुआ है विचार किया गया. और उसे पता चलता है कि ऐसा कुछ भी नहीं है।

ऐसा कुछ भी नहीं है जो वास्तव में अभिशाप, पतित दुनिया की समस्या का समाधान कर सके। ऐसा कुछ भी नहीं है जो किसी तरह से मृत्यु का उपचार करता हो, मानव जाति का सामान्य अनुभव। उसे पुनरुत्थान का रहस्योद्घाटन ज्ञान नहीं था।

वह ईसा मसीह के बारे में नहीं जानता था। तथ्य यह है कि जहां बुद्धि समस्या, दुविधा या हेवेल की दुविधा को हल करने के लिए मेज पर कुछ भी लाने में असमर्थ थी , वह स्वयं भगवान ही थे जो अंततः मोचन इतिहास में हेवेल की समस्या का समाधान करते थे। यह स्वयं ईश्वर है जो इतिहास की दिशा बदलता है।

यह स्वयं ईश्वर है जो इस पतित संसार का उद्धार करता है। कोहेलेट ज्ञान के माध्यम से जो नहीं पा सके, वह हम ईसा मसीह के माध्यम से पाते हैं। मुझे लगता है कि रोमियों अध्याय 8 विशेष रूप से इस बात को उजागर करता है जब प्रेरित पॉल सृष्टि के भ्रष्टाचार और संतों की प्रतीक्षा कर रही मुक्ति के बारे में बात करता है।

किसी भी मामले में, सभोपदेशक के ज्ञान पर वापस जाएँ। जहां एक्लेसिएस्टेस असमर्थ है, जहां कोहेलेट यिट्रोन को खोजने में असमर्थ है , वह वह खोज लेता है जो ज्ञान करने में सक्षम है। बुद्धि प्रदान करने में सक्षम है।

बुद्धि कुछ ऐसा प्रदान करने में सक्षम है जो बेहतर है। इस गिरी हुई दुनिया में जीवन जीना बेहतर है, चाहे हमारे वर्ष कितने भी अनिश्चित और छोटे क्यों न हों। मूर्ख के बजाय एक बुद्धिमान व्यक्ति के रूप में, जीवन में अपने निर्णयों में बुद्धिमत्ता लागू करने से नियमित लाभ होंगे।

ईश्वर के प्रति उचित रुझान उस पैकेज का एक हिस्सा है। समय पर निर्णय लेना उस पैकेज का एक हिस्सा है। समय की उपयुक्तता को जानना उस पैकेज का एक हिस्सा है।

ईश्वर के विरुद्ध और उसके विरुद्ध किसी की स्थिति को पहचानना उस पैकेज का हिस्सा है। जीवन की समस्याओं को उचित तरीके से संभालने और उनसे निपटने में सक्षम होना। किसी का दांव लगाना।

जीवन में जोखिम उठाना. जब आप अध्याय 7, अध्याय 10 और अध्याय 11 की नीतिवचन पढ़ते हैं, तो पता चलता है कि कोहेलेट अत्यंत व्यावहारिक हैं। सच तो यह है कि, यहां तक कि एक अविश्वासी भी, यदि उन सिद्धांतों और उपदेशों को व्यवहार में लाए जो एक्लेसिएस्टेस के लौकिक ज्ञान में पाए जाते हैं, तो उन्हें उन लोगों की तुलना में जीवन में सफलता मिलने की अधिक संभावना होगी जो इन्हें लागू नहीं कर रहे थे। जैसे-जैसे वे अपने वर्षों को जीते हैं, चीजों को निर्णय लेने और चीजों की योजना में शामिल करते हैं।

और इसलिए, उस अर्थ में, सभोपदेशक की पुस्तक बहुत व्यावहारिक है। लेकिन कोहेलेट इससे भी आगे निकल जाता है। वह पतित दुनिया में रहने वाले जीवन के कुछ धार्मिक कठिन बिंदुओं या प्रश्नों से भी जूझ रहा है।

अय्यूब किस प्रकार के मुद्दों से निपटता है उसके बारे में क्या? भगवान के न्याय की रक्षा. मनुष्य इन चीज़ों के बारे में किस प्रकार की समझ रखता है जो इस दुनिया में इतनी असंवेदनशील और इतनी अन्यायपूर्ण लगती हैं? ज़रूरी नहीं है कि कोहेलेट हमें इस बात का स्पष्ट उत्तर दे कि ईश्वर चीज़ें क्यों करता है। अय्यूब की तरह, अय्यूब कभी भी उत्तर नहीं जानता।

लेकिन कोहेलेट हमें बताता है कि ईश्वर ये काम इसलिए करता है ताकि मनुष्य उससे डरे। तो निश्चित रूप से, मनुष्य के लिए, एक बुद्धिमान व्यक्ति के लिए, इसे समझना एक फायदा है। यह जानते हुए कि वह जो कर्म करेगा, उसका उत्तर देगा, फिर से संयम में रहना।

मृत्यु की अनिवार्यता के प्रकाश में, कोहेलेट मानते हैं कि बुद्धिमान व्यक्ति को न केवल जीवन में सफलता पाने के लिए ज्ञान का उपयोग करना चाहिए, बल्कि बुद्धिमान व्यक्ति को उन उपहारों को भी पहचानना चाहिए जो ईश्वर हमें देता है, वह आवंटन जो वह प्राप्त करने में सक्षम होने के लिए प्रदान करता है। जीवन और अनुभव के इस वर्तमान संदर्भ में आनंद पाने के लिए ईश्वर की कृपा। और इसलिए कोहेलेट इस बात पर बहुत दृढ़ हैं कि बुद्धिमान लोग जीवन को ईश्वर से मिले उपहार के रूप में आनंद लेंगे, हर अवसर का लाभ उठाएंगे, जो आज किया जा सकता है उसे कल तक नहीं टालेंगे क्योंकि हो सकता है कि आपको कल की गारंटी न हो। मुझे लगता है कि अपने जीवन में भी जिन चीज़ों पर मुझे सबसे अधिक पछतावा होता है, वे वे चीज़ें हैं जो मैंने नहीं कीं क्योंकि मैंने उन्हें छोड़ दिया था और उन्हें छोड़ दिया था और उन्हें छोड़ दिया था।

और मेरी उम्र अभी 40 के बीच में है। आप किसी ऐसे व्यक्ति से बात करें जो 70, 80, या 90 के दशक में है, शायद अपने जीवन के अंत की ओर है, और वे आपको बताएंगे कि मैंने जो किया वह उतना नहीं है, हालांकि कभी-कभी हम निश्चित रूप से सोचते हैं कि हमें पछतावा है, लेकिन यह है अक्सर वे चीजें जो मैंने नहीं कीं, आज मुझे पछतावा होता है क्योंकि मुझे उन्हें दोबारा करने या दोबारा करने का अवसर नहीं मिलेगा। और इसलिए कोहेलेट एक बुद्धिमान व्यक्ति है जो वर्तमान में अनुभव को प्रोत्साहित करता है, वर्तमान संभावनाओं के साथ जीवन जीने के लिए, साथ ही परिणाम में ईश्वर की व्यवस्था को पहचानता है।

और इसलिए, संभावित संभावनाओं का यह विचार, संभाव्य अवसर का ज्ञान, सभोपदेशक के संदेश का एक हिस्सा प्रतीत होता है। लेकिन जीवन को उसकी पूर्णता से जीने और जीवन का आनंद लेने में, ईश्वर हमें जो सिम्चा प्रदान करता है, और उपलब्धि के लिए उन अवसरों को ढूंढना, न केवल उपलब्धि के लिए, बल्कि जीवन में ईश्वर की कृपा पाने के लिए भी। इन सभी चीज़ों के बीच, इसका मतलब यह नहीं है कि मनुष्य को परमेश्वर के भय में नहीं रहना चाहिए। और इसलिए, दो-तरफा ज्ञान सिक्के का यह विचार, विशेष रूप से युवा, भगवान के उपहार के रूप में जीवन का आनंद लेंगे, हर अवसर का अधिकतम लाभ उठाएंगे, लेकिन वे संयम से जिएंगे, मान्यता और श्रद्धा में जिएंगे कि भगवान हैं जिसका जवाब उन्हें एक दिन अवश्य देना होगा।

यह इतना व्यावहारिक ज्ञान है, इतना व्यावहारिक और प्रतिमानात्मक। इस प्रकार की सामग्री को एक युवा समूह में, युवाओं को, उनकी किशोरावस्था में, अंतिम किशोरावस्था में, शायद बीस के शुरुआती वर्षों में पढ़ाने के बारे में सोचें, जिनके सामने संभावित रूप से उनका पूरा जीवन पड़ा है। इनके लिए, यदि वे इस विचार को समझ लेंगे कि जीवन को कोई एक या एक प्रस्ताव नहीं होना चाहिए, तो यह या तो जीवन का आनंद लेने के लिए जीने या भगवान से डरने, शायद जीवन का आनंद छोड़ने का मामला नहीं है।

नहीं, नहीं, नहीं। यह सभोपदेशक का ज्ञान नहीं है। बल्कि यह विचार है कि एक बुद्धिमान व्यक्ति जीवन को पूरी तरह से समझेगा, साथ ही यह भी पहचानेगा कि वास्तव में उनके ऊपर कौन है।

ईश्वर के प्रति एक उचित मुद्रा और अभिविन्यास हमारे जीवन में निर्णय लेने के तरीके को निर्धारित करता है। नीतिवचन की पुस्तक में, ईश्वर का भय ज्ञान की शुरुआत है। सभोपदेशक की पुस्तक में, ईश्वर का भय ही ज्ञान का अंत है।

हम इसे बुद्धि के जिस भी पक्ष से देखें, आरंभ से या अंत से, यह ईश्वर का भय ही है जो बुद्धि को एक साथ जोड़ता है। इस अर्थ में सभोपदेशक की पुस्तक बाकी पवित्रशास्त्र के बहुत अनुरूप है।